

---

.. *durgA pancharatnam* ..

॥ दुर्गा पञ्चरत्नम् ॥

---

ते ध्यानयोगानुगता अपश्यन्  
त्वामेव देवीं स्वगुणैर्निगूढाम् ।  
त्वमेव शक्तिः परमेश्वरस्य  
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि ॥ १॥  
देवात्मशक्तिः श्रुतिवाक्यगीता  
महर्षिलोकस्य पुरः प्रसन्ना ।  
गुहा परं व्योम सतः प्रतिष्ठा  
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि ॥ २॥  
परास्य शक्तिः विविधैव श्रूयसे  
श्वेताश्ववाक्योदितदेवि दुर्गे ।  
स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया ते  
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि ॥ ३॥  
देवात्मशब्देन शिवात्मभूता  
यत्कूर्मवायव्यवचोविवृत्या  
त्वं पाशविच्छेदकरी प्रसिद्धा  
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि ॥ ४॥  
त्वं ब्रह्मपुच्छा विविधा मयूरी  
ब्रह्मप्रतिष्ठास्युपदिष्टगीता ।  
ज्ञानस्वरूपात्मतयाखिलानां  
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि ॥ ५॥  
इति परमपूज्य श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती  
स्वामीगल-कृतं दुर्गा पंचरत्नं संपूर्णम् ॥

Proofread by Gayathri V vgayu at yahoo.com

## Document Info

---

**Text title :** durgA pancharatnam  
**Author :** chandrashekharendra sarasvatii svaamiigala  
**Language :** Sanskrit  
**Category :** pancharatna  
**Subject :** philosophy \hinduism \religion  
**Description/Comments :**

**Transliterated by :**  
**Proofread by :** Gayathri V vgayu at yahoo.com  
**Latest update :** Octobe 2, 2011

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---

*Please help to maintain respect for volunteer spirit.*

---

durgApancharatnam.pdf  
was typeset on January 19, 2015 using XeLaTeX  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)